इंटरनेशनल मंच पर चमकेंगी नेहा धूपिया

अभिनेत्री नेहा धूपिया अपने अभिनय करियर के एक नए और महत्वपूर्ण पड़ाव पर पहुंच गई हैं. उनकी पहली इंटरनेशनल फीचर फिल्म '52 ब्ल्यू' का यूरोपियन प्रीमियर 9 जुलाई को लंदन के प्रतिष्ठित ब्रिटिश फिल्म इंस्टिट्यूट साउथबैंक में आयोजित किया जाएगा. खास बात यह है कि इसी फिल्म के साथ इस वर्ष के लंदन इंडियन फिल्म फेस्टिवल का भव्य उद्घाटन भी होगा.

भारतीय कलाकार के रूप में यह उपलब्धि नेहा धूपिया के करियर में एक अहम मील का पत्थर मानी जा रही है. फिल्म के ट्रेलर और शुरुआती फुटेज को पहले ही दर्शकों और समीक्षकों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल चुकी है. खास तौर पर नेहा धूपिया के अभिनय, उनके भावनात्मक किरदार और फिल्म की संवेदनशील कहानी की व्यापक सराहना की जा रही है. फिल्म मानवीय रिश्तों, भावनाओं और जीवन के गहरे पहलुओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है, जिसने इसे अंतरराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल सर्किट में चर्चा का विषय बना दिया है. फिल्म की चर्चा को और अधिक वैश्विक आयाम इसलिए भी मिला है क्योंकि विश्व फुटबॉल के दिग्गज लियोनेल मेसी भी इस प्रोजेक्ट से जुड़े हुए हैं. उनके नाम के साथ जुड़ने से फिल्म को अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के बीच अतिरिक्त पहचान मिली है. यही कारण है कि '52 ब्ल्यू' को इस वर्ष फेस्टिवल की सबसे बहुप्रतीक्षित फिल्मों में गिना जा रहा है.

क्या फिर लौटेंगे मिहिर विरानी

क्योंकि सास भी कभी बहू थी' का दूसरा सीजन दर्शकों के बीच लगातार चर्चा में बना हुआ है. शो ने एक बार फिर परिवार, रिश्तों और भावनात्मक संघर्षों के साथ पुराने दौर की यादें ताजा कर दी हैं. तुलसी की जिंदगी में आए नए मोड़ों और लगातार बदलते घटनाक्रमों ने कहानी को दिलचस्प बनाए रखा है, लेकिन इसके बावजूद दर्शकों का ध्यान एक ऐसे किरदार पर टिका हुआ है, जिसकी अब तक वापसी नहीं हुई है मिहिर विरानी. मौजूदा कहानी में तुलसी के जीवन में कई बड़े बदलाव देखने को मिले. बरखा बिष्ट के रूप में न्योना की एंट्री, उसका सच सामने आना और तुलसी द्वारा उसे घर से बाहर निकालने का फैसला दर्शकों के बीच खूब चर्चा में रहा. इसके बाद अंश के हमशक्ल रियो की एंट्री ने कहानी में नया मोड़ ला दिया. वहीं पार्थ का राक्षसी रूप में बदलना और अंत में उसकी मां नंदिनी के हाथों उसकी मौत, जबकि तुलसी का नंदिनी को बचाने के लिए खुद दोष अपने सिर लेना, कहानी के सबसे भावनात्मक और चौंकाने वाले ट्रैक में शामिल रहा.

कान्स की सुनहरी यादों में खोईं सेजल

अभिनेत्री सेज़ल शर्मा ने इस वर्ष के कान्स फिल्म फेस्टिवल में अपने अनुभवों को साझा करते हुए इसे अपने करियर की सबसे यादगार और प्रेरणादायक यात्राओं में से एक बताया है.

उनके अनुसार, कान्स केवल ग्लैमर और रेड कार्पेट तक सीमित आयोजन नहीं है, बल्कि यह सिनेमा, संस्कृति, रचनात्मकता और वैश्विक कला का ऐसा संगम है, जहां दुनिया भर की प्रतिभाएं एक मंच पर एकत्र होती हैं. सेज़ल शर्मा ने कहा कि कान्स के रेड कार्पेट पर चलना उनके लिए गर्व और उत्साह से भरा क्षण था. उन्होंने बताया कि समारोह के दौरान विभिन्न देशों के फिल्म निर्माताओं, अभिनेताओं, निर्देशकों और रचनात्मक पेशेवरों से मिलने का अवसर मिला, जिसने उनके दृष्टिकोण को और व्यापक बनाया.

उनके अनुसार, इस तरह के अंतरराष्ट्रीय मंच कलाकारों को केवल पहचान ही नहीं देते, बल्कि नए विचारों, नई संभावनाओं और बेहतर रचनात्मक सहयोग की राह भी खोलते हैं. उन्होंने कहा कि कान्स फिल्म फेस्टिवल हर कलाकार को बड़े सपने देखने और उन्हें साकार करने का आत्मविश्वास देता है. यही कारण है कि यह अनुभव उनके दिल के बेहद करीब रहेगा. उन्होंने इस अवसर के लिए आभार व्यक्त करते हुए उम्मीद जताई कि भविष्य में उन्हें एक बार फिर इस प्रतिष्ठित फिल्म समारोह का हिस्सा बनने का अवसर मिलेगा.

सेज़ल ने यह भी कहा कि कान्स में मौजूद रहना उनके लिए वैश्विक स्तर पर भारतीय प्रतिभा का प्रतिनिधित्व करने का सम्मान था.

उर्वशी की हिंदी ने जीता दिल

अभिनेत्री उर्वशी रौतेला एक बार फिर चर्चा में हैं, लेकिन इस बार वजह उनकी कोई नई फिल्म, फैशन लुक या अंतरराष्ट्रीय उपलब्धि नहीं, बल्कि हिंदी और संस्कृत पर उनकी प्रभावशाली पकड़ है. सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक वीडियो में उर्वशी जिस सहजता, शुद्धता और आत्मविश्वास के साथ हिंदी बोलती नजर आ रही हैं, उसने लाखों लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है. उनकी स्पष्ट उच्चारण शैली और समृद्ध शब्दावली की सोशल मीडिया पर व्यापक सराहना हो रही है.

वीडियो सामने आने के बाद कई प्रशंसकों ने कहा कि आज के दौर में, जब कई कलाकार अंग्रेज़ी को प्राथमिकता देते हैं, उर्वशी का शुद्ध हिंदी में प्रभावी संवाद भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान और जुड़ाव का संदेश देता है. लोगों का मानना है कि वैश्विक मंच पर पहचान बनाने के बावजूद अपनी मातृभाषा और सांस्कृतिक विरासत से जुड़े रहना उनकी सबसे बड़ी विशेषता है. बताया जाता है कि भाषाओं के प्रति उर्वशी का प्रेम बचपन से ही रहा है. स्कूली शिक्षा के दौरान उन्होंने संस्कृत विषय में विशेष रुचि दिखाई थी और आठवीं कक्षा में 100 में से 100 अंक प्राप्त किए थे. यह उपलब्धि उनकी भाषाई दक्षता और अध्ययन के प्रति गंभीरता को दर्शाती है. यही मजबूत आधार आज भी उनकी भाषा शैली में साफ दिखाई देता है. उर्वशी रौतेला ने भारतीय सिनेमा के साथ-साथ कई अंतरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट्स में भी काम किया है और विभिन्न वैश्विक मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है. इसके बावजूद उन्होंने भारतीय संस्कृति, परंपराओं और भाषाओं से अपना जुड़ाव कभी कम नहीं होने दिया. वायरल वीडियो में भी उनकी भाषा और अभिव्यक्ति इस सांस्कृतिक जुड़ाव की झलक प्रस्तुत करती है. सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के बाद प्रशंसकों ने उनकी जमकर तारीफ की.

वे जुनून के साथ लौटा आवारापन का जादू

अभिनेता इमरान हाशमी की बहुप्रतीक्षित फिल्म आवारापन 2 का पहला गाना वे जुनून रिलीज़ हो गया है. फिल्म के टीजर को मिली शानदार प्रतिक्रिया के बाद यह इमोशनल ट्रैक दर्शकों के बीच चर्चा का नया केंद्र बन गया है. गीत में प्यार, दर्द, बिछड़ने की कसक और भावनात्मक गहराई को बेहद खूबसूरती से प्रस्तुत किया गया है, जिसने फिल्म को लेकर दर्शकों की उत्सुकता को और बढ़ा दिया है. विशेष फिल्म्स और सोनी म्यूज़िक इंडिया द्वारा जारी इस गीत को संगीतकार मिथुन ने कंपोज़ किया है, जबकि इसके बोल सईद क़ादरी ने लिखे हैं. गीत को नए गायक सुबोध शर्मा ने अपनी भावपूर्ण आवाज़ से सजाया है. संगीत, शब्द और गायकी का संतुलन इस ट्रैक को भावनात्मक रूप से बेहद प्रभावशाली बनाता है.

इससे पहले 29 जून को मूल फिल्म आवारापन की 19वीं वर्षगांठ के अवसर पर रिलीज़ किए गए टीजर ने सोशल मीडिया पर जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की थी. टीजर यूट्यूब पर नंबर-1 ट्रेंड तक पहुंच गया था और दर्शकों ने इसे इमरान हाशमी की दमदार वापसी बताया. टीजर में दिखाई गई भावनात्मक झलक और रहस्य ने फिल्म के प्रति उत्साह को नई ऊंचाई दी थी. अब वे जुनून उसी भावनात्मक सिलसिले को आगे बढ़ाता दिखाई देता है. गीत यह संकेत देता है कि फिल्म सिर्फ पुरानी यादों का सहारा लेकर आगे नहीं बढ़ रही, बल्कि मूल आवारापन की आत्मा और भावनात्मक गहराई को बरकरार रखते हुए एक नई कहानी दर्शकों के सामने पेश करेगी.

रहूं मैं तेरे रूबरू का ट्रेलर हुआ रिलीज

रोमांस और मर्डर मिस्ट्री के अनोखे मेल पर आधारित फिल्म 'रहूं मैं तेरे रूबरू' का बहुप्रतीक्षित ट्रेलर सोमवार को रिलीज़ कर दिया गया। पहले पोस्टर और टीज़र से दर्शकों के बीच उत्सुकता जगाने वाली इस फिल्म ने अब ट्रेलर के जरिए अपनी कहानी की कई परतों से पर्दा उठाया है, हालांकि सबसे बड़ा रहस्य अब भी बरकरार रखा गया है. यही वजह है कि ट्रेलर देखने के बाद दर्शकों के बीच फिल्म की कहानी और उसके अंतिम मोड़ को लेकर चर्चाएं तेज हो गई हैं.

करीब तीन मिनट के ट्रेलर में रोमांस, भावनात्मक रिश्ते, विश्वासघात, बदलती पहचान और एक रहस्यमयी हत्या की गुत्थी को बेहद सिनेमाई अंदाज में प्रस्तुत किया गया है. कहानी की शुरुआत एक सामान्य प्रेम संबंध से होती दिखाई देती है, लेकिन कुछ ही पलों में घटनाएं ऐसा मोड़ लेती हैं, जहां हर किरदार संदिग्ध नजर आने लगता है.

यही सस्पेंस ट्रेलर को अंत तक बांधे रखता है. फिल्म में आर्या कुमार, नीथा शेट्टी और पीहू बिस्वास मुख्य भूमिकाओं में हैं. तीनों कलाकारों के बीच प्रेम, टकराव और रहस्य की परतें कहानी को लगातार आगे बढ़ाती हैं. ट्रेलर में संवादों के साथ भावनात्मक दृश्यों और तेज रफ्तार घटनाक्रम का संतुलन दर्शकों का ध्यान आकर्षित करता है. निर्देशक इंदर दास ने फिल्म को कमर्शियल थ्रिलर का रूप देते हुए मनोरंजन और रहस्य दोनों को बराबर महत्व देने की कोशिश की है.

फिल्म की कहानी और स्क्रीनप्ले आर्या कुमार ने तैयार किया है, जिसमें हर मोड़ पर नया ट्विस्ट देखने को मिलता है. सिनेमैटोग्राफी सोनू कुमार तिवारी और कमल एस. चौपाल ने की है, जबकि क्रिएटिव डायरेक्शन की जिम्मेदारी आर्या कुमार और हिमांशु तिवारी ने संभाली है. फिल्म का निर्माण सुमन सौरभ ने किया है. संगीतकार सोनू राव का संगीत और शैलेश राव का बैकग्राउंड स्कोर ट्रेलर की सबसे मजबूत कड़ियों में शामिल हैं. शब्बीर सर्वे के गीत और हिमांशु तिवारी का संपादन कहानी की गति को प्रभावशाली बनाए रखते हैं.

कपूर परिवार में गूंजी शहनाई अंशुला ने रचाई शादी

फिल्म निर्माता बोनी कपूर के परिवार में खुशियों का माहौल है. उनकी बेटी और अभिनेता अर्जुन कपूर की बहन अंशुला कपूर ने अपने लंबे समय से रहे साथी रोहन ठक्कर के साथ विवाह कर अपने जीवन की नई शुरुआत की है. शादी समारोह परिवार और करीबी दोस्तों की मौजूदगी में संपन्न हुआ, जहां खुशी, भावनाएं और उत्सव का माहौल देखने को मिला. शादी के बाद सामने आई पहली तस्वीरों ने सोशल मीडिया पर तेजी से सुर्खियां बटोर ली हैं.

महीद की नई फैमिली देखकर टूटेगा सेहर का दिल

कलर्स के चर्चित धारावाहिक 'सेहर होने को है' में दर्शकों को जल्द ही जबरदस्त ड्रामा और इमोशनल ट्विस्ट देखने को मिलेगा. शो में आए सात साल के लीप के बाद कहानी अब कश्मीर पहुंच चुकी है, जहां महीद और सेहर अलग-अलग जिंदगी जी रहे हैं.

दोनों एक-दूसरे की मौजूदगी से अनजान हैं, लेकिन किस्मत लगातार उन्हें करीब लाने की कोशिश कर रही है. महासंगम एपिसोड में अमाल को महीद के कश्मीर में होने की जानकारी मिल जाती है और वह सेहर को उससे मिलने से रोक देती है. दूसरी ओर, एक हादसे के दौरान महीद एक युवती को डूबने से बचाता है. युवती का चेहरा फूलों से ढका होता है, लेकिन जैसे ही वह आंखें खोलती है, महीद उसकी आंखों को पहचान लेता है. उसे एहसास होता है कि वह सेहर है. हालांकि, सेहर की वह कसम याद आते ही कि वह कभी उससे नहीं मिलेगी, महीद खुद को उससे दूर कर लेता है. महीद अब भी उस पल को नहीं भूल पाया है, जब सेहर ने उसे कौशर की मौत का जिम्मेदार ठहराया था.

कृषि जगत

किचन गार्डन में कैसे उगाएं कुंदरू की बेल

घरों में किचन गार्डन बनाने का चलन लगातार बढ़ रहा है. लोग अब बाजार की बजाय अपने घर में ही ताज़ी, रसायन-मुक्त और पौष्टिक सब्जियां उगाने को प्राथमिकता दे रहे हैं. ऐसी ही सब्जियों में कुंदरू (आइवी गार्ड) एक बेहतरीन विकल्प है. इसकी बेल कम देखभाल में तेजी से बढ़ती है और लंबे समय तक भरपूर उत्पादन देती है. विशेष रूप से बरसात का मौसम इसकी रोपाई के लिए सबसे अनुकूल माना जाता है.

कुंदरू की खेती के लिए अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त रहती है. मिट्टी तैयार करते समय उसमें गोबर की सड़ी हुई खाद या वर्मी कम्पोस्ट मिलाने से पौधे की शुरुआती वृद्धि बेहतर होती है. इसे बीज की बजाय बेल की कलम (कटिंग) से लगाना अधिक सफल माना जाता है, क्योंकि इससे पौधा जल्दी विकसित होता है और कम समय में फल देना शुरू कर देता है. बेल को तेजी से फैलने के लिए किसी जाली, बांस, तार या मजबूत सहारे की आवश्यकता होती है. जैसे-जैसे बेल ऊपर चढ़ती है, उसकी शाखाएं फैलती जाती हैं और कुछ ही सप्ताह में हरे-भरे पत्तों से पूरा ढांचा ढक जाता है. उचित देखभाल मिलने पर एक पौधा कई महीनों तक लगातार कुंदरू देता रहता है.

बरसात के मौसम में कौन-सी फसल उगाएं

खरीफ का मौसम भारतीय कृषि का सबसे महत्वपूर्ण सीजन माना जाता है. इस दौरान होने वाली बारिश खेती की दिशा और किसानों की आय दोनों तय करती है. मानसून शुरू होते ही किसान धान, सोयाबीन, मक्का, बाजरा, ज्वार, कपास, मूंगफली, उड़द और अरहर जैसी खरीफ फसलों की बुवाई शुरू कर देते हैं. लेकिन अच्छी पैदावार के लिए केवल बारिश का होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि सही फसल का चयन भी उतना ही आवश्यक है.

खरीफ फसलों की पहचान करना आसान है. जिन फसलों की बुवाई जून से जुलाई के बीच मानसून की शुरुआत में की जाती है और जिनकी वृद्धि मुख्य रूप से वर्षा के पानी पर निर्भर होती है, उन्हें खरीफ फसल कहा जाता है. इनकी कटाई आमतौर पर सितंबर से नवंबर के बीच की जाती है.

यदि खेत में पर्याप्त पानी रुकने की क्षमता है और वर्षा अच्छी होती है, तो धान सबसे उपयुक्त फसल मानी जाती है. वहीं मध्यम वर्षा वाले क्षेत्रों में सोयाबीन और मक्का किसानों के लिए लाभदायक विकल्प बनते हैं. कम वर्षा वाले इलाकों में बाजरा, ज्वार और अरहर जैसी फसलें बेहतर उत्पादन देती हैं. कपास की खेती उन क्षेत्रों में अधिक सफल रहती है जहां जल निकासी अच्छी हो और लंबे समय तक गर्म मौसम बना रहे. खरीफ फसल चुनने से पहले खेत की मिट्टी की जांच कराना जरूरी है. इससे यह पता चलता है कि मिट्टी में कौन-से पोषक तत्व मौजूद हैं और किस फसल के लिए वह अधिक उपयुक्त है. साथ ही प्रमाणित बीजों का उपयोग, समय पर बुवाई और संतुलित उर्वरक प्रबंधन उत्पादन बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. खेत में जल निकासी की व्यवस्था भी बेहद जरूरी होती है.

अधिक पानी भरने से सोयाबीन, कपास और दालों की फसल को नुकसान हो सकता है, जबकि धान अधिक पानी सहन कर लेता है. इसलिए फसल का चयन हमेशा स्थानीय मौसम और खेत की स्थिति को ध्यान में रखकर करना चाहिए. किसान केवल परंपरा के आधार पर फसल न चुनें, बल्कि वर्षा की स्थिति, मिट्टी की गुणवत्ता, सिंचाई की उपलब्धता और बाजार की मांग का भी आकलन करें. यदि संभव हो तो कृषि विज्ञान केंद्र या कृषि विभाग से सलाह लेकर क्षेत्र के अनुसार उपयुक्त किस्मों का चयन करें.

मानसून में पशुओं के चारे का रखें खास ध्यान

मानसून का मौसम पशुओं के लिए जितना अनुकूल दिखाई देता है, उतना ही संवेदनशील भी होता है. इस दौरान हरा चारा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहता है, लेकिन अधिक नमी और लगातार बारिश के कारण चारे की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है.

ऐसे में पशुपालकों को पशुओं के आहार पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है, ताकि वे बीमारियों से बचे रहें और उनकी उत्पादकता बनी रहे. बारिश के मौसम में पशुओं को ताजा और साफ हरा चारा ही खिलाना चाहिए. खेत से काटकर लाए गए अत्यधिक गीले चारे को तुरंत नहीं खिलाना चाहिए. बेहतर होगा कि उसे कुछ घंटों तक छायादार स्थान पर हल्का मुरझाने दिया जाए, ताकि अतिरिक्त नमी कम हो जाए. इससे पाचन संबंधी समस्याओं की संभावना घटती है.

हरे चारे के साथ सूखा चारा जैसे गेहूं का भूसा, सूखी घास या चारा अवश्य मिलाकर खिलाएं. केवल हरा चारा देने से कई बार पशुओं के पेट में गैस, अपच या दस्त की समस्या हो सकती है. संतुलित आहार के लिए दाना, खली और मिनरल मिश्रण भी नियमित मात्रा में देना जरूरी है, जिससे पशुओं को आवश्यक ऊर्जा, प्रोटीन और खनिज मिलते रहें. बारिश के मौसम में सबसे बड़ी सावधानी यह है कि फफूंद लगा, सड़ा-गला या बदबूदार चारा कभी भी पशुओं को न खिलाएं.

मानसून में सही चारा प्रबंधन, संतुलित पोषण, स्वच्छ पानी और नियमित स्वास्थ्य निगरानी से पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत रहती है. इससे दूध उत्पादन में गिरावट नहीं आती और पशुपालकों को बेहतर आर्थिक लाभ मिलता है. थोड़ी-सी सावधानी और वैज्ञानिक तरीके से चारा प्रबंधन अपनाकर बारिश के मौसम में भी पशुओं को पूरी तरह स्वस्थ और उत्पादक रखा जा सकता है.

बारिश में खेत की कैसे करें देखभाल

मानसून का मौसम खेती के लिए बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है. बारिश फसलों की बढ़वार के लिए आवश्यक होती है, लेकिन अत्यधिक वर्षा या लगातार बारिश कई बार किसानों के लिए नई चुनौतियां भी खड़ी कर देती है. खेत में पानी भरना, मिट्टी का कटाव, पोषक तत्वों का बह जाना, खरपतवार की तेजी से बढ़ोतरी और रोग-कीटों का प्रकोप जैसी समस्याएं फसल को नुकसान पहुंचा सकती हैं. ऐसे में बारिश के बाद खेत की सही देखभाल करना हर किसान के लिए जरूरी हो जाता है.

बारिश थमने के बाद सबसे पहले पूरे खेत का निरीक्षण करें. यदि किसी हिस्से में पानी जमा है तो उसकी तुरंत निकासी करें. लंबे समय तक जलभराव रहने से पौधों की जड़ें सड़ सकती हैं और फसल की वृद्धि रुक सकती है. खेत की मेड़ों और नालियों की भी जांच करें ताकि अतिरिक्त पानी आसानी से बाहर निकल सके. इसके बाद फसल की स्थिति का आकलन करें. यदि तेज बारिश या हवा से पौधे झुक गए हों तो उन्हें सहारा दें. टूटे या सड़े हुए पौधों को अलग कर दें ताकि संक्रमण अन्य पौधों तक न फैले. बारिश के बाद मिट्टी से कई पोषक तत्व बह जाते हैं, इसलिए आवश्यकता अनुसार संतुलित उर्वरकों या जैविक खाद का उपयोग करें. इससे पौधों की बढ़वार फिर से सामान्य होने लगती है. खरपतवार बहुत तेजी से बढ़ते हैं. ये फसल के पोषक तत्व और नमी छीन लेते हैं. इसलिए समय पर निराई-गुड़ाई करें और खेत को खरपतवार मुक्त रखें. साथ ही लगातार नमी रहने से फफूंदजनित रोग और कीटों का खतरा भी बढ़ जाता है.

बारिश के मौसम में खेत में अनावश्यक आवाजाही से बचें, क्योंकि गीली मिट्टी में चलने से मिट्टी दब जाती है और जड़ों तक हवा पहुंचने में दिक्कत होती है. सिंचाई भी तभी करें जब मिट्टी में नमी की कमी महसूस हो, क्योंकि अधिक पानी फसल के लिए नुकसानदायक हो सकता है. मानसून के दौरान नियमित निगरानी, जल निकासी की उचित व्यवस्था, समय पर खरपतवार नियंत्रण, संतुलित पोषण और रोग-कीट प्रबंधन अपनाकर किसान अपनी फसल को सुरक्षित रख सकते हैं.